

II-228

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

कसम रनको सायां मदाग यां सूच दाना मगद यतिवर्मैति स्म ॥ उयसा नृदि या उयसा नृमानसावदू य
जावदू दितवदू रल्ययि दानमयन साक्ष मदा साक्षा काला नी संडागन यनसग वात्सू मा उयसं वा मरुग
वतस्था दोमिलसा वदित्वा सग वतमन कसतसद मु यदक्षि निवात्वा यवा नृयणू षदिरका तनित्व भुच
डागदयती सग वतम तद वास नृक मयमदं रगा वनृवत तथा गतमद त्सम्यक् वृक्ष वा स्वाद वयदश सच
त्यसग वानृ वका श्रुवा त्या वृथा कवनारा धारवं मूकुरुग वानृ सचद्वगु ययति गतद वास तपयुक्तं गदय

तडाद वाता नृस्यद नृयथा य वृथा कौ वना नवित्वा माला थयि स्थामि तयवं मूक सच दाना मगद स्याते सायू
लगवं नितिकृत्वा रग वता यतिवचनं मुख्य कृतं तयू ता रत्वा रगवं नृम तद वासत ॥ यथं रग वन कूल
यूजा वा कूल इक्षिता वा द्रविड रत्वा अद्रविड र वीति ॥ व्याधि ता रत्वा अद्राधि ता र वीति ॥ अयति थि रग
रूयूजा दा वा कू नृमा श्रा र वीति प्रियय मन आ य स्य मना श्रा द मना य र वीति ॥ अश्रु ता नृ रग वानृ डी ननद
सूचद्वगद यति रग वनृम तद वास नृकै मितित्वं गदयति ॥ डविडा र्दं सग वन डविडा र्दं सूचद्व वा द्वा वदू

युवावद्द्रविणयावद्गुरुत्वायचिजनसंयन्नतदस्यनुमरुगवत्तादृसाधमयशाययनदविद्राप्तत्वा नदवि
 दारवयूःयाधितस्मायाधितानवयूःवद्वधनधान्यकादृकाज्ञावसयत्तास्वरवयूःहाधियमनज
 वस्वामानाङ्गनदशनीयरविद्युति॥यानयतर्षोमदायानययसाक्षीन्यस्वादिबन्धसूत्रगुप्तनधान्यकाय
 काश्यांगममनिमोलिन्नकाम्बोकावजर्वद्वयसंत्वसिलायुवावकातरयवजतसमृद्धास्वरवदूभायवमू
 क्तगवन्तुद्वस्वयनमुचद्वागदयतिभतदवारतज्जुगदयतिररुतयूचमतिस्तवावधन्यस्ययः

काल्ययुरदाशितनकायनतनसमयनतगवान्सीवडाधरशागममीरनिर्थायानामतखामतादृह
 सम्यक्वद्वालाकडल्यादिरविद्याचरतासमन्तसूगतालाकविदत्तत्रशायूरयदमसावविसासा
 बंदवानाश्रद्धारुगवान्तरस्याहिकालयावाल्यूवसूकरानीणामसूत्रासूत्रागोदितवविनावा
 चितादसीतायशवाहाऊनूमादितववयस्ववित्तनानांयुकाशिता॥ऊदमयतदितवानीताविद्य
 ॥ऊर्यांविनिर्न्यायत्तावनवूवयूमानूयनविदवयराति॥ऊमानूयानविदथरति॥नागनांविदक

॥यदानीविदथरति॥

नि॥ वाक्शानां विदधयति॥ रूतानां विदधयति॥ औं हूं वं कों नां विदधयति॥ विं मां वा॥ यत्नानां विदध
 यति॥ प्रियमात्रानां विदधयति॥ वृक्षं कृत्वा नां विदधयति॥ उच्छ्रयवानां विदधयति॥ अघसात्रानां वि
 दधयति॥ सर्वग्रहानां विदधयति॥ कृत्वा शास्त्रानां विदधयति॥ यवयावमुद्यादायानां विदधयति॥ मदादा
 या विदधयति॥ धृष्टिवादायानां विदधयति॥ धूयादायानां विदधयति॥ वस्त्रादायानां विदधयति॥ मन्त्रादायानां विदधयति॥
 यासीदायानां विदधयति॥ वाक्शानां विदधयति॥ रूतानां विदधयति॥ औं हूं वं कों नां विदधयति॥ विं मां वा॥ यत्नानां विदध

मदादायानां विदधयति॥ धूयादायानां विदधयति॥ धूयादायानां विदधयति॥ धूयादायानां विदधयति॥ धूयादायानां विदधयति॥
 निन्यानां विदधयति॥ कृत्वा शास्त्रानां विदधयति॥ उच्छ्रयवानां विदधयति॥ अघसात्रानां विदधयति॥ मदादा
 या विदधयति॥ धूयादायानां विदधयति॥ धूयादायानां विदधयति॥ धूयादायानां विदधयति॥ धूयादायानां विदधयति॥
 यासीदायानां विदधयति॥ वाक्शानां विदधयति॥ रूतानां विदधयति॥ औं हूं वं कों नां विदधयति॥ विं मां वा॥ यत्नानां विदध

नयत्ययन्यामावृद्ध्यात्तगवन्त्यात्तनमदकममैस्त्वारात्तथागताराइदत्यसमयवृद्धायन
 मइत्यावागमनसमयवृद्ध्यात्तगवन्त्यात्तनमदकममैस्त्वारात्तथागताराइदत्यसमयवृद्धायन
 यावमित्यावित्युक्त्या॥रुद्रयुगयापुत्यामाविद्यासीनसुतासावसुयावशिविनसुथाविदुमुप
 झायाशैवजुरुदवलानवा॥कनकाकपास्यकान्यनकास्ययस्यधृतमुनेथासायासिंदस्यविदुयनमनयस्य
 युतिङ्गाया॥समृद्धानुगध्यागतत्यावेममनुयुदाममसवसत्वादितयाविदुयाविदुयवसनागुयत्या

याविमावकात्यहा॥२०मावसूयावानामवावनिविद्यादलसंयवकामिनथागतत्याधमनुयुन्यनूसावमि
 तिनमद्यथा॥ॐहं॥सीधनधनसुरमुकुमान्यश्रुकायासाविनीतात्यादनि॥मनसीमानसी॥वातवातावल
 विष्णुचमूननायशतसववलवमालकावतनादिधनधान्यासमृद्धिदुर्विनितात्ययादनिर्मशाह
 नीमुतास्यकासवासागावदादनिवृद्धस्यत्यमन्यदरनिवृद्धसत्यनधमसत्यनर्मसत्यनसववृद्धवा
 धिसत्वसत्वाधियाशालसत्यसवप्रावकसत्ययत्यवावृद्धसत्यवृद्धसत्यविष्णुसत्य॥२१सत्य॥लावायाव

८ ५

सत्य धनदशनसमाङ्गा कथनी मुक्तामान्यादिलन्यमुवर्णमनिमूढो वञ्चयेद् शुभं त्वसीलायुवावदअतयय
जातयमगगनिलकक्कदनमवडवममृच्चररवनुषायेवृद्धिसदसदमानात्यमाधियत्यकाय
सियदाहेरुगवतिवडाधरमागगनित्यायतथागनददिल्यस्यवादिनि॥ जौवलश्रितिलि१ सुल१दुल१
मृ१ल१ल१ल१ल१॥ १॥ लललललल॥ १॥ ॐ नितिश्रमितिश्रसअलश्रिमल१ ॐ हागकागक॥ त गवतिम
धका नमनाप्रथयवियुप्रयति उतिश्रुश्रविद्यालाङ्गासववृद्धातगवत्तसमाङ्गाययतिस्वाहा॥ नमस्तेयधी

१०१

कानामतवागतानां॥ तद्यथा॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥
मावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥
दिश्रितिश्रुवंधनप्रदहृगजश्रीस्थारयप्रसवविद्यायकानीमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥
कंदंयदस्वादा॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥
ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥ ॐ नमावत्तठयाया॥

स्वादा॥ उं मणि व म द्रं स्वादा॥ उं वज्र म द्रं स्वादा॥ उं सवति सुद्ध ध म ता व अ सि द्वि द्रं स्वादा॥ उं सवत पा ग त
 ज्ञान शा गी॥ स ल द्रं स्वादा॥ उं सवत पा ग ता इ वा रं स्वादा॥ उं य द्वा र महा यु द्वा सु ति सि नी वि द्य र स्वादा
 ॥ उं श्री स ल य र ल य र यु ग्वा स्वादा॥ त य र्था॥ उं श्री सी म्प र्थ स्वादा॥ उं श्री दि य र्थ स्वादा॥ उं श्री ज्ञान र्थ
 स्वादा॥ उं श्री य द्वा र म ति स्वादा॥ उं श्री वज्र स त्त्व द्वा र य स्वादा॥ उं श्री रु द्वा स्वादा॥ उं श्री सु र द्वा स्वादा॥
 उं श्री रु द्वा व ति स्वादा॥ उं श्री सु र द्वा॥ उं श्री सु रु द्वा व ति स्वादा॥ उं श्री सु म ग र स्वादा॥ उं श्री म ग र म ति स्वादा॥ उं
 उं श्री सु र्थ स्वादा॥ ३

व
 न

१०२

ज्ञा ल य स्वादा॥ उं ज्ञा र य स्वादा॥ उं ज्ञा र स्वादा॥ उं ज्ञा र स्वादा॥ उं श्री ड त्या न ति
 स्वादा॥ उं श्री व द्वा द ति स्वादा॥ उं श्री स ल य व ति स्वादा॥ उं श्री स ल य व ति स्वादा॥ उं श्री ध न व ति स्वादा॥ उं श्री
 ध न य व ति स्वादा॥ उं श्री म ति स्वादा॥ उं श्री यु ग म ति स्वादा॥ उं श्री म ल य स्वादा॥ उं श्री वी म र्थ स्वादा॥ उं श्री
 ल ल य स्वादा॥ उं श्री नि म ल य स्वादा॥ उं श्री म ल ना म ति स्वादा॥ उं श्री सु र्थ व ति म ल य स्वादा॥ उं श्री ज्ञ न न
 र्थ स्वादा॥ उं श्री वि न न र्थ स्वादा॥ उं श्री वि न न र्थ स्वादा॥ उं श्री वि स द्वा र स्वादा॥ उं श्री वि स द्वा र स्वादा॥

६
व

ॐ श्री विद्या मयि स्वादा ॥ ॐ श्री विभुष मी ल्य स्वादा ॥ ॐ श्री श्रं वृ ल्य स्वादा ॥ ॐ श्री मंदू ल्य स्वादा ॥ ॐ श्री युनः
कू ल्य स्वादा ॥ ॐ श्री मंदू ल्य स्वादा ॥ ॐ श्री युनं वृ ल्य स्वादा ॥ ॐ श्री अमाय ता वृ सुक कं स्वादा ॥ ॐ श्री कृ काम सिद्धि
युन तनि स्वादा ॥ ॐ श्री अा वनि स्वादा ॥ ॐ श्री वा सनि स्वादा ॥ ॐ श्री लि म् स्वादा ॥ ॐ श्री लू लू म् स्वादा ॥ ॐ श्री धू
वृ म् स्वादा ॥ ॐ श्री धि धि म् स्वादा ॥ ॐ श्री तल १ स्वादा ॥ ॐ श्री हल म् स्वादा ॥ ॐ श्री लि लि म् स्वादा ॥ ॐ श्री म म् स्वादा
दा ॥ ॐ श्री शि ताल यनु मत्त ग वति व म् प्रा ग म नति रा व म् स्वादा ॥ ॐ श्री रु ग वति अः

१०३

ताल यनु ता ल्यनु स्वादा ॥ ॐ श्री तग वति व म् प्रा वा ना म धाल नि म म ल कौ व ल न गु र्थिं वा लि स्वादा ॥ ॐ श्री
व ऊ य म् स्वादा ॥ ॐ श्री म दा व ऊ य म् स्वादा ॥ ॐ श्री अ वति नि स्वादा ॥ ॐ श्री य व व ति स्वादा ॥ ॐ श्री र क
१ स्वादा ॥ ॐ श्री थ क १ स्वादा ॥ ॐ श्री ड क १ स्वादा ॥ ॐ श्री ड क १ स्वादा ॥ ॐ श्री लू क १ स्वादा ॥ ॐ श्री व म् लि
स्वादा ॥ ॐ श्री ती त्या द नि स्वादा ॥ ॐ श्री व ऊ ध ल रा शि ल नि त्या या रा म ल म नू म ल स्वादा ॥ ॐ श्री म व त
वा त म ल्य म ल्य म नू म ल ॥ ॐ श्री वृ ह म ल्य म नू म ल स्वादा ॥ ॐ श्री ध म म ल्य म नू म ल स्वादा ॥ ॐ श्री म य म ल

४
२

मनुसालखादा॥ उं श्री तर्क्ये वा ला सवति शङ्क गवां ते नाङ्क स वा सा य वि य र व स धा व अ मि द्दु द वा सां
गा व य वि य लाने ध न धा न स वा य वा ल ना नि ना ना च ल नि स्वा दा ॥ जं श्री य वि य ल य स्वा दा ॥ उं श्री मङ्गल
स्वा दा ॥ उं श्री मु मङ्ग ल स्वा दा ॥ उं श्री मङ्गल मति स्वा दा ॥ जं श्री रू मङ्गल वति स्वा दा ॥ जं श्री मु न वति स्वा दा ॥ उं
श्री मु न दु मति स्वा दा ॥ जं श्री य ल ड मति स्वा दा ॥ उं श्री यो द मति स्वा दा ॥ उं श्री स व ड न व स वा लि स्वा दा ॥ उं
श्री स व दू ण नि दू न नि स्वा दा ॥ जं स व स नू वि ना म नी कं य र स्वा दा ॥ जं श्री जू ग का ग र म म य म नू स स्वा दा

१९५

जं श्री जू द ल म नू स ल स्वा दा ॥ उं श्री यु ल म नू स ल स्वा दा ॥ जं श्री धु ति म नू स ल स्वा दा ॥ उं श्री ड य म नू स ल
स्वा दा ॥ जं श्री वि क र म नू स ल स्वा दा ॥ उं श्री वि म ल म नू स ल स्वा दा ॥ जं श्री स व त था ग त वि न र म नू स ल
स्वा दा ॥ उं श्री म म र म नू स ल स्वा दा ॥ जं श्री म म र म ल म नू स ल स्वा दा ॥ जं श्री व म धा ल नि स्वा दा ॥ उं श्री व म
स्वा दा ॥ जं श्री व ध स्वा दा ॥ जं श्री स व म र स्वा दा ॥ उं श्री व म ध लि स्वा दा ॥ उं श्री व म म ति धि य स्वा दा ॥ जं श्री व धा
वि नी र स्वा दा ॥ उं श्री म दाल श्री लू लाने वा मि नि र स्वा दा ॥ उं श्री व म धा स्वा दा ॥ जं श्री र म यं श्री वा ली धन

व. १०

[illegible]

703

[illegible]

मन्त्रानां स्वादा॥ तद्यथा॥ उं वनरवितिरुत्तुमूलरुमन्त्रुत्तुतयालि॥ धदि॥ ददायय॥ उन्निस्त्रवि
 उं द्यालाङ्गीसवधनधान्यहिलयासुवर्णदितददाययस्वादा॥ ज्ञानयानायस्वादा॥ वस्तान्नयनायस्वा
 दा॥ उं वसुधास्वादा॥ उं वसुधायाद्विद्यत्यस्वादा॥ उं वसुधायास्वादा॥ उं गोस्वादा॥ उं जूजुल्यस्वादा॥ उं
 ०० डारस्वादा॥ उं यात्रिकास्तस्वादा॥ उं रमायस्वादा॥ उं वसुधायास्वादा॥ उं वैश्वमनायस्वादा॥ उं दिती
 लायायायायस्वादा॥ उं विदिसिवाकयालायस्वादा॥ उं विदिसुलाकयालायस्वादा॥ उं सवलाकयालाः

यस्वादा॥ उं सवधनधान्यसुवर्णनिधान्यानिमांददिददाययस्वादा॥ उं सवदधानीनमस्वादा॥ उं स
 वनागारनमस्वादा॥ उं रक्षारनमस्वादा॥ उं सवयदायनमस्वादा॥ उं सवायाद्विद्यत्ययनमस्वा
 दा॥ उं सवसुधायाद्विद्यत्ययनमस्वादा॥ उं सवसुधायाद्विद्यत्ययनमस्वादा॥ उं सवमातृलेताधिययनमस्वा
 दा॥ उं सवदुर्विनीत्यनमस्वादा॥ उं सवमदाकालायनमस्वादा॥ उं सवमालालित्यनमस्वादा॥ उं सव
 निह्मलित्यनमस्वादा॥ उं सववृत्तिनित्यनमस्वादा॥ उं सवयिज्ञावीत्यनमस्वादा॥ उं सवयकनि

704

२२

दा॥ जैमुत्तादवीनमस्वदा॥ जैविद्विद्वत्पुत्रोत्ता नमस्वदा॥ जैयातिमालिये नमस्वदा॥ जैकामल
कलदायस्वदा॥ जैकामलसुखदायस्वदा॥ जनमइडीजायकलदायस्वदा॥ जैमीमठकामलकाः
लदायनमस्वदा॥ जैमीमंत्यालायस्वदा॥ जैमीवसुधालास्वदा॥ जैमीकंस्वदा॥ जैवसुधवाः
जैमीरंवाविधनंवाविंदीस्वदा॥ जैमीरुलादवीनमस्वदा॥ जैमीलंवादवीनमस्वदा॥ जैमीवसु
धदादवीनमस्वदा॥ जैमीवसुधदादवीनमस्वदा॥ जैमीधनवतीस्वदा॥ जैमीधान्यवतीस्वदा॥

व
१३

ॐ श्री वरुणाय नमः स्वादा ॥ ॐ श्री श्री मति स्वादा ॥ ॐ श्री यज्ञावति स्वादा ॥ ॐ श्री यदुवति स्वादा ॥
ॐ श्री लडावति स्वादा ॥ ॐ श्री सवगुणावति स्वादा ॥ ॐ श्री सववसुधा स्वादा ॥ ॐ श्री वसु स्वादा ॥ ॐ
श्री वसुधालि स्वादा ॥ ॐ श्री कंतलडल्यं डाय स्वादा ॥ ॐ लो वू मः स्वादा ॥ ॐ गुह्य मति द्या सव १०
आकाशयः स्वादा ॥ ॐ आहवित्य मदावलदू स्वादा ॥ ॐ श्री गुह्यादवी स्वादा ॥ ॐ श्री स्वस्वति यवी
स्वादा ॥ ॐ श्री वदुवा नादवी स्वादा ॥ ॐ श्री धनदा मदा नदी स्वादा ॥ ॐ श्री यममदा यम को स्वादा

ॐ विवेका दालि कालि गालि वे स्वादा ॥ ॐ श्री पूर्णसूय नो स्वादा ॥ ॐ मदा वलनि धनयावो
स्वादा ॥ ॐ स्वादा ॥ ॐ स्वादा ॥ नः स्वादा ॥ लः स्वादा ॥ लः स्वादा ॥ डः स्वादा ॥ यः
स्वादा ॥ स्वाः स्वादा ॥ दाः स्वादा ॥ ॐ वडा ममा डः ॐ वेदा ॥ ॐ देः स्वादा ॥ ॐ श्रीः स्वादा ॥ ॐ श्रीः
स्वादा ॥ ॐ श्री स्वादा ॥ ॐ यज्ञा श्री स्वादा ॥ ॐ आः स्वादा ॥ ॐ स्वः स्वादा ॥ ॐ सूरः स्वादा ॥ ॐ देः स्वादा ॥
ॐ आः स्वादा ॥ यतसं मम सव मत्वा ना आ सव धन धान्य सूर्यगुनि ददाय स्वादा ॥ ॐ डसुलजान

व ११

दाययधनमागल्यमदानिधानं कश्चिन्निरुत्तमसदग्रयविष्टत्वायददित्तगवतिवसुधाल्ययुः
विष्णुमल्यवंमत्तवंन्यमदानिधानं वातयश्चतुल्लङ्घनं तत्कालामनिवांसिनिस्तगवति वसुधाल्यममः
शवसत्वानाञ्चसचासान्यायविष्टयस्वादाः ॥ १ ॥ यमागदयति वसुधांतामक्षयनिअस्याधालिनीं ॥ ४ ॥
साव्यनलागदोत्तिक्षनलवकातालादयानयत्तवति ॥ नत्त ४ ॥ यालयुक्तं मांतिवसुधायातामक्षलनिम
जुयदानितथागतानां मरुतां संमोयं वृद्धानां युङ्गं कृत्वा यन्मासानां वज्रयज्जत्त ४ ॥ शिष्टान्तगवतिः ॥

११७

यस्यादिशि ॥ यविद्याधायलमादिग्यकृतमातात्तवति ॥ तत्तागदयत्यय ४ ॥ कश्चित्कूलयुजावायु
लददित्तावा मययावसुधालात्तगवतियुतिमावायत्तमायसाययथाविचवंयुङ्गयित्तायत्यरुमह्यः
युमासादानताधालनीमविद्धिनमावत्युत्त ॥ तस्य अमनसवसुधालिचवति ॥ तत्तस्यान्तायाधिदेवरा
निरामनलक्षणमनिनामयित्ता ॥ यून ४ ॥ यत्तयश्चमगश्चकालनमात ४ ॥ विमलवसुधावृतायुक्त
वित्तत्वा ॥ वायुवायुल्लालत्वांनयति मावायत्तमायसायत्तदुनननमगुर्वकृत्वा ॥ शानिदानं प्राव

निविबन्धुवान्नविदिन्नरान् तत्तागदयत्तस्य दानयः तमदयत्तस्य मानयः वैशालयागदयः
 विधूयति॥ सवधनवा न्यदिबल्या मृग्यस्य वा कालने स रसवा युदवा सु न सरति॥ अथ
 वातवैद्यल्यस्य गन्धकल्य नसूरी मल वसुं यादृत्त्य मद्ययानवा विवदिता निलामि यात्र अः ११५
 लववसाजि युद्धा वा विस्तृता योधि काथस्य गृहवा ययगृहवा मुतत्वा न्यक्त स वा यज्ञाल्य वा य
 द्यन्य नवतसु मस्यु ल कृत्वा तगत्सुधाग तस्या सावला कि तस्य स्य सवदृष्ट वा प्रिसत्वा नी मनुदवल्

यास्यागता यथा विनवा मडा ला वृक्षं कृत्वा मुसमादितस्त्वा न्वत्तगतिता वयन्य कचि ता त्यादव सवत्
 त्वायादित्ता य सत्वा य मुद्धा याय लमुद्ध या सनिदाज रु मां व मूधा ला ता म धा लानि न वा मुन म्य क
 लानुया मदा वातस्यु वा जनि वायले ल नाल या विन्न विदिन्न माव न्नयन॥ ओ रा आ स्येथे
 वनियमन लानो नि कृत्वा सवत्त्य दाले यूडा यन्॥ तथै य दान यतिलयि निरस्य न सव माव यन॥
 यवा ल्य स यै थायथ सत्या सूवना तादि दाना द्यात्॥ तत इय चित्ति सिद्धात्त गवत्ति॥ तस्या वूलयूज

व
१७

वाकलद्रुदितावामसायुवमानयावमधालायागुदयपियवरति॥सवधनप्राच्यदिरणसुवर्ण
सतायकवनेसुयवियुलरति॥सवायुदुवाहनासयहि॥वनदिगुरुयातेरक्ततानगुरुकुसुमांतमस
लातामधालानिप्रालयतासयदसयगुदयवमवायुमानयलंलसुविहलनसंयवासीतादीयन
मयायादिनायसुत्वारयलिहंतागायथागसंभावायकुमारयसितेकाययति॥ततइसाधुतगवने
कालसुवदानाममसयतिरेगवताहीकाहमावसुधावानामधायनीमुत्ताद्वदुउदुदगज

११२

तनायुमयेतुतिहोमनस्यअतातगवतखलनथानेयलकृतकलयताचुत्तातग व नमनद
वावन्॥उगुदितातगवतिसववसुधावानामधालनियुदुताधारितायमवायानूमादितामन
सायविसिहेताययलसुविहलनजूमयानेसमुकासारेयामिति॥अथतुकरनमायुनसुवदुगुदयति
पयवियुर्कसावकासुज्ञानावुवन॥अथतुल्लसुवदानामगुदयदितगवतगकतसदमुयदाकेली
काल॥तगवतइयादीमिबसातिवाधिलालगवतयनइयूनलवयाकातगवतहितालंलुगुदयविहल

व
१६

डाकी ना॥ यदियूः सवधनधान्यवत्ततलूयलर्जतसमृद्धौ सवयकलनेस्वमसादासु कुरुनग
लानिचयवियूः ॥ दद्यात्तविमोताहृदयुडरगुआत्मानायभूदितह्यीनि सोमनस्यउरवियुवि
हंसमाना इयवियूः मनावर्था॥ कसमूलमृदसिगुहदयावद्वत्तगवहि वसूधावान
सधननियकारितता सूर्यवदयतादा॥ जयह्वरुसुवदुनामगृहयतिवृद्धं जूयस्ययशाद
नममन्वागतायमस्तुवृयवदयसादवद्रमानविलिवालरविहृमत्या दरातिस्मा॥ जयह्वरु

११

नगवानायुषाहमानदमानुयात्यसपगकृतमानदुसूचदुसगृहयत्यलागालंगत्वावयवियूः
यस्यसवधनधान्यसमृद्धसर्वयकवनेस्वकायकृद्गालानिचयवियूः यसासवधनधान्य
समृद्धि सवायकलनेस्वकायकायगालावियूः निगृथत्वत्यायुषाननद्यानगवत्तावनमो
म्युनिभूत्ययनयोसाविमदातगरिचानसूचदुसगृहयत्यलागालं तनायुकाताडयसंकुम्भाः
लनलयविसायाकीना॥ यदियूः सवधनधान्यसमृद्धं मदकायकायगालानिचयवियूः निगृ

२०

नि॥ कुमनवित्तवातस्य सर्वं च त॥ नारुमाद्यतं धर्ममनूयस्यामि॥ सद्यवद्यासायासमानेवाभ्य
 रित्वाचायकुरामदवमानूयासुवायां यत् कृमां विद्यायां नमथ क्व विद्यति॥ अति कुमनिवा ने न
 स्वानं विद्यत्य॥ त्वासाद ताह अत्यशान्य त्वा नूनदवसूपायानामक्षवनी मन्त्रयुदानि धालयिष्यति
 वारयिष्यति॥ न वेत्तानि किं न दू सत्तमूलानि कुतियश्च मया गमिष्यति॥ वाहयूतवादास्तुराय
 सुकगताद्ददवगताने धालयिष्यति॥ तत्त्वासाद ता॥ सवतस्वागतास्यत्वायां॥ सवतस्वागतै

११५